सर्वदेव
हवन विधि



॥श्री गणेशाय नमः॥

सर्वदेव हवन पद्धति

प्रमुख देवी-देवताओं का हवन कराने की सरल विधि आरतियों सहित



—: लेखक :—

महर्षि रामसेवक आचार्य

भागवत-प्रवक्ता

मनोज प्रकाशन

- पुस्तक का नाम : **सर्वदेव हवन पद्धति**
- लेखक : **महर्षि रामसेवक आचार्य**
- प्रकाशक : **मनोज प्रकाशन**

  3/69 मानपाड़ा, आगरा—3

  Ph. 98974 48521

- मूल्य : **₹ : 80/**
- लेजर टाइप सैटिंग : **आर.पी. ग्राफिक्स**

  संजय प्लेस, आगरा

भूमिका

हवन एक हमारी वैदिक सभ्यता का मुख्य अंग है। हवन के द्वारा ही सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र होता है। लोकहित के लिए हवन एक मंगलकारी कृत्य है। हवन वेदों का मुख्य विषय है। वेद तीन भागों में विभक्त हैं—(1) कर्मकाण्ड (2) उपासना काण्ड (3) ज्ञान काण्ड, जिसमें कर्मकाण्ड का विषय बड़ा है। अन्य काण्ड की अपेक्षा कर्मकाण्ड के मंत्र अधिक हैं। जो हवन में सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं। हवन हमारी सब ओर से रक्षा करता है। हवन करने से सारे रोगों का शमन, आदि-व्याधि, प्रेत बाधा, संकट तथा अनेक होने वाली परेशानियों से मुक्ति दिलाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक हवन का विशेष महत्व है। भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि हवन (यज्ञ) से वर्षा और वर्षा से अन्न, अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं। अर्थात् हवन द्वारा हम अपना इष्ट मनोरथ भी पूरा कर सकते हैं। आज भी सनातन धर्मावलम्बियों के घरों में हवन की बड़ी मान्यता है। सनातन धर्म वालों को जब कोई पीड़ा होती है, तो वे अपने कुल गुरू (पंडित) द्वारा समस्या निदान हेतु श्रद्धा से हवन कराते हैं और उन्हें हवन कराने से इष्ट कामना की पूर्ति होती है। आज वर्तमान समय में भौतिक सुख साधनों की कोई कमी नहीं है, फिर भी मनुष्य अनेक मानसिक, शारीरिक परेशानियों से पीड़ित है। सुख-शान्ति पाने के लिए, धन-धान्य की वृद्धि के लिए, सर्वकष्टों की निवृत्ति के लिए पापों से छुटकारा पाने के लिए हवन ही एकमात्र सरल साधन है। जिसे सभी लोग समयानुसार कर सकते हैं। कुछ लोग हवन स्वयं करते हैं, उसका उतना लाभ उन्हें नहीं मिलता है। क्योंकि बिना अनुभव के हवन फलदायी नहीं है। इसलिए अपने आचार्य (कुल गुरु) द्वारा ही विधिवत् हवन कराना श्रेयष्कर है।

वैदिक सोलह संस्कार भी हवन द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। बिना हवन के कोई भी संस्कार सुसंस्कारित नहीं होता है। इसलिए सभी संस्कार हवनमय है। वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में हवन विषय पर अनेक मंत्र हैं। हवन द्वारा ही समस्त देवता तृप्त होकर सुख-शान्ति प्रदान करते हैं। इसलिए मेरे मन में यह भाव आया कि हवन विषय पर कोई ऐसी सरल सर्वदेव हवन पद्धति तैयार की जाय जो क्रमबद्ध, प्रामाणिक, शुद्ध पाठ तथा विधिविधान पूर्वक होवें और एक ही पोथी द्वारा सभी देवताओं का हवन किया जा सके।

सार्वजनिकता, सरलता, क्रमबद्धता की उपयोगिता का ध्यान रखते हुए **''सर्वदेव हवन पद्धति''** को प्रकाशित किया गया है। उक्त पोथी में कोई मानवीय त्रुटि जान पड़े, तो मुझे अथवा प्रकाशक महोदय को अवश्य अवगत करावें। ताकि सुधार किया जा सके। मुझे आशा है कि यह पुस्तक पंडित, पुरोहित, आचार्य व कर्मकाण्डी वर्ग हेतु विशेष उपयोगी सिद्ध होगी।

—महर्षि रामसेवक आचार्य
(भागवत-प्रवक्ता)
ग्राम-नाहर पुर, जलेसर रोड,
रेलवे स्टेशन, (हाथरस) उ.प्र.
मो. 09758049008

!!सम्मति–पत्रम्!!

ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान एवं श्रीमद् भागवत के **रससिद्ध** प्रवक्ता महर्षि रामसेवक आचार्य जी के द्वारा लिखित " सर्वदेव हवन पद्धति" पुस्तक देखने का अवसर मिला।

आज यज्ञ–हवनादि के प्रति जन साधारण हिन्दूजनों में जो उदासीनता है, उसका कारण वेद–शास्त्र के पण्डित अपने ज्ञान एवं अनुभव को समयानुकूल सरल शैली में शिक्षितजनों तक पहुँचाते नहीं है। हर्ष की बात है कि आचार्य जी ने हवन विधि के प्रति क्रमबद्धता, सरलता, मंत्र–श्लोक, एवं सरल विधि पूर्वक दिये हैं।

मैं विद्वान लेखक की रचना सर्वदेव हवन पद्धति के प्रति शुभ कामना, साथ ही सबको जानने के लिये अनुरोध करता हूँ।

दिनांकः 21/7/16

(संजीव ओझा) 21/7/16
तहसीलदार
जलेसर (एटा)

अनुक्रमणिका

हवन का महत्व

हमारे वेद-शास्त्रों में हवन की महत्ता पर बहुत कुछ लिखा है। जो यहाँ पर सार रूप में कुछ सूत्र दिये जा रहे हैं।

1. **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**—अर्थात् यज्ञ ही संसार का श्रेष्ठतम कर्म है।
2. **अयज्ञियो हत वर्चाभवति**—अर्थात् यज्ञ न करने से वर्चस्व नष्ट हो जाता है।
3. **यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः**—अर्थात् यज्ञ ही विश्व भुवन की नाभि है।
4. **प्राचं यज्ञं प्रणतया सस्वाय**—अर्थात् प्रत्येक शुभ कार्य यज्ञ के साथ आरंभ करना चाहिए।
5. **महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीय क्रियते तनु**—अर्थात् यज्ञ और महायज्ञ द्वारा ही यह शरीर ब्राह्मण बनता है।
6. **सर्वेषां देवानां आत्मा यद् यज्ञः**—अर्थात् सर्वदेवों की आत्मा यज्ञ ही है।
7. **इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञ भाविताः**—अर्थात् यज्ञ से प्रसन्न होकर देवता अभीष्ट सुख प्रदान करते हैं।
8. **भद्रोनो अग्नि राहुतः**—अर्थात् यज्ञ में दी हुई आहूतियाँ शुभ होती हैं।

हवन सामग्री (आहूतिऽनुसार)

गुलाल—हरा, लाल, पीला
काले तिल, विल्व पत्र, आम्रपत्र,
तुलसी पत्र, दूर्वा घास, दीपक
गूगल
चन्दन चूरा
चौकी, चौकी वस्त्र
इन्द्र जौ
गुलाब पंखुड़ी
कपूर, चावल
रोली, बूरा
सिन्दूर, अगर, तगर
चन्दन (गोपी)
धूपबत्ती
रूई, गोला
कलावा (मोली)
लाल, पीला, हरा, काला (रंग)
फूल माला, फूल
नारियल-कलश हेतु
कलश (मिट्टी/धातु का)
बताशे
पंच मिठाई
पंच फल
गुलाब जल
गंगाजल
सेन्ट (इत्र)

पंच पान के पत्ते
पंच सुपाड़ी
पंच मेवा
पंच इलाइची
पंच वस्त्र
पंच बर्तन
लालटून (झण्डी का कपड़ा)
सप्त धान्य—जौ, गेहूं, चावल, तिल कांगनी, उड़द, मूँग।
सप्त मृत्तिका—हाथी स्थान, अश्व स्थान, वाल्मिक, दीमक, नंदी संगम, तालाब, गौशाला+राज द्वार।
सर्वोषधि नागरमोथा, ब्राह्मी, कस्तूरी, अगर
श्रृंगार पेटिका दुर्गा पूजन हेतु
चाँदी वर्क हनुमत पूजा हेतु
चमेली तेल सिन्दूर
पंचामृत—दही, दूध घी, शहद, तुलसी दल
महाप्रसाद
समिधा—आम, पीपल, आक, ढाक, छोंकर, गूलर, दूर्वा, मदार, अपामार्ग, कुश आदि।
चित्र/मूर्ति धातु की जिस देवता का हवन होना है।

नोट—समयानुसार सामान कम या अधिक कर सकते हैं।

हवन-पूजा नियम

(1) पूजा में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गा मूर्ति, दो गोमती चक्र, दो शालिग्राम निषेध हैं।

(2) गंगाजी, शिवलिंग और शालग्राम भगवान का आवाहन-विसर्जन नहीं करें।

(3) तुलसी का अग्रभाग तोड़ना चाहिए। एक-एक पत्ती नहीं। तुलसी मंजरी सब फूलों में श्रेष्ठ है।

(4) तुलसी दल तोड़ने का निषेध समय—वैधृति, व्यतिपात योग, मंगलवार, शुक्रवार, रविवार, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्राति, सूतक, दोनों संध्या आदि समय तुलसी चयन हेतु वर्जित है।

(5) बिल्व पत्र तोड़ने का निषेध समय—चौथ, आठे, नोमी, चौदस, अमावस्या, संक्रान्ति तथा सोमवार को न तोड़ें। पूजा हेतु एक दिन पूर्व चयन कर लेना चाहिए।

(6) वासी जल, वासी फूल का उपयोग पूजा में न करें किन्तु गंगाजल, तीर्थजल, बिल्वपत्र, तुलसीपत्र यह वासी नहीं होते हैं।

(7) फूल, फल, पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही ऊपर की ओर मुख करके चढ़ावें। मध्यमा-अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

(8) **पूजा की सामग्री बाँई ओर**—जल पात्र, घण्टा, धूपदानी, चौमुखा तेल दीपक आदि। हवन कुण्ड के पूर्व दिशा में वारूणी कलश, दाहिनी ओर दीपक, शंख तथा सामने पूजा की थाली रखें। पूर्व और दक्षिण के मध्य चौकी स्थापित करें।

हवन कुण्ड चौकोर बनावें तथा तीन मेखला युक्त होवें। प्रथम मेखला सफेद, द्वितीय लाल, तीसरी काली होनी चाहिए।

(9) किसी भी देवी-देवता का पूजन निम्न विधि से किया जा सकता है—

❖ **पञ्चोपचार**—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

❖ **दशोपचार**—पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवैद्य।

❖ **षोडशोपचार**—पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पुष्पाञ्जली, नमस्कार।

हवनकर्ता के नियम

❖ हवन से पूर्व स्नान अवश्य करें। रोगी, पाँच वर्ष से छोटे बालक, और अति वृद्ध पुरुषों पर नियम लागू नहीं है।

❖ सभी हवनकर्ता पालथी मारकर सरलासन पर बैठें।

❖ चमड़े का पर्स, बैल्ट या अन्य वस्तु दूर रखें।

❖ पीला अगोंछा भाइयों पर तथा पीला दुपट्टा (चादर) बहिनों के सिर पर अवश्य होनी चाहिए।

❖ हवन करते समय वस्त्र से सिर अवश्य ढकें।

❖ जिन बच्चों को मलमूत्र का ज्ञान (बोध) न हो, ऐसे बच्चों को हवन पर न लावें।

❖ हवन-पूजा करते समय एकाग्रमन से बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ शान्त और मौन होकर बैठें।

❖ हवनकर्ता को चाहिए कि वे बिना दक्षिणा पूजा-हवन न करें। बिना दक्षिणा के पूजा निषेध मानी गई है।

❖ हवनकर्ता आहूति देकर तथा आरती-प्रसाद लेकर ही जायें। बिना आरती-प्रसाद लिए कोई फल नहीं मिलता है। अहंकार और दम्भ से हवन पूजा न करें।

हवन प्रारम्भ

सर्वप्रथम यजमान सपत्नीक सिर वस्त्र से ढककर ऋतु अन्न से अञ्जली भरकर चौक पर बैठें। गृहलक्ष्मी (पत्नी) को पति के दाहिने हाथ की ओर बिठावें।

॥ मंगलाचरण ॥

आचार्य अपने दाहिने हाथ पर चावल-पुष्पादि लेकर हवन कार्ता यजमान के सिर पर बिखेरते हुये निम्न मंत्र बोलें—

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टवा ꣳ सस्तनूभिः व्यशेमहि देवहितंयदायुः॥

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे, सञ्जानाना उपासते॥

॥ पवित्रीकरण ॥

हवनकर्ता अपने बायें हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक लेवें, मंत्र पूरा होने पर हाथ धोयें। आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करें—

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः, पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि, जातवेदः पुनीहि मा ॥१॥
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥२॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

॥ आचमनम् ॥

सभी हवनकर्ता अपने दाहिने हाथ पर सुवासित जल लेकर निम्न मंत्रों के साथ तीन बार आचमन करें। आचार्य मंत्र बोलें—

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

पुनः पवित्रीकरण हेतु हस्त प्रक्षालन करें।

॥ शिखावन्दनम् ॥

हवनकर्ता व महिलाएँ अपनी बायें हाथ पर जल लेकर उसमें दाहिने हाथ की पांचों उँगलीयां डुबोकर चोटी स्थान का जल से तीन बार स्पर्श करें। आचार्य मंत्र बोलें—

ॐ चिद्रूपिणी महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्वमे॥

॥ न्यासकर्मः ॥

सभी हवनकर्ता अपने बायें हाथ पर जल लेकर दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका उँगली जल में डुबोकर मंत्र व आचार्य के संकेतानुसार प्रत्येक इन्द्रिय का अभिमंत्रित जल द्वारा स्पर्श करें। आचार्य मंत्र बोले—

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु। (मुख से)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका-छिन्द्रों से)

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों से)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों से)

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं से)

ॐ ऊर्वोमे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं से)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

(समस्त शरीर पर शेष जल छिड़क लेवें।)

॥ तिलक-धारणम् ॥

सर्वप्रथम हवनकर्ता यजमान के माथे पर आचार्य निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥१॥

ॐ आदित्या वसवोरुद्रा, विश्वेदेवा मरूद्गणाः।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु, धर्मकामार्थ सिद्धये॥२॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअघूषत। अस्तोषत
स्वभानवो विप्रा, न विष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥३॥

ॐ दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे, सुप्रजास्त्वाय
सहसा अथोजीव शरदः शतम्॥४॥

ॐ गन्ध द्वारां दूराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ५॥

तिलक पर चावल लगाने का मंत्र—

ॐ येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।

ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्॥६॥

॥ रक्षा सूत्र बन्धन ॥

आचार्य सभी हवनकर्ताओं के निम्न मंत्रों से कलावा (रक्षा सूत्र) बांधें। सौभाग्यवती स्त्री के बाँये हाथ में, तथा कुमारी लड़की और पुरुषों के दाहिने हाथ में रक्षा सूत्र बाँधें। मुट्ठी बाँध कर दूसरा हाथ सिर पर होवें।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय

सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शत

शारदाय आयुष्मांजर दष्टिर्यथासम्॥१॥

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यत॥२॥

ॐ येनबद्धो बलीराजा, दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वां प्रतिबध्नामि, रक्षे मा चल मा चल॥३॥

॥ कुशपवित्री-धारणम् ॥

मुख्य यजमान के दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में कुश की बनी पवित्री (अँगूठी) निम्न मंत्र बोलकर आचार्य धारण करावें।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः, प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य

यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

॥ यज्ञोपवीत-धारणम् ॥

यदि मुख्य यजमान ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण से है, तो आचार्य जनेऊ निम्न मंत्र बोलकर धारण करावें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरुस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

॥ आचार्य-वरणम् ॥

मुख्य यजमान अपने हवन-पूजानुष्ठान हेतु कुलगुरु (आचार्य) का वरण करें, क्योंकि आचार्य एक प्रत्यक्ष देवता है।

आचार्य देवो भव। (आचार्य लक्षणम्।)

वेदांगी ब्रह्मचारी च गुणवान् सुविलक्षणः।
नीतिज्ञो बुद्धिमान् श्रेष्ठ एवमाचार्य उच्यत॥

वेद के सब अंगों को जानने वाला, जितेन्द्रीय, गुणवान्, विद्वान्, नीतिमान् और सत्यवादी ये छः गुण आचार्य के हैं।

मुख्य यजमान अपने आचार्य का तिलक निम्न मंत्र से करें।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिद्र्धात॥१॥

ॐ नमो ब्रह्मण्य गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

तिलक के बाद मुख्य यजमान आचार्य के सीधे हाथ में कलावा बाधें

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽनोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यत॥

आचार्य वरण-संकल्पः—ॐ अमुक गोत्रोहं अमुक आचार्य नामं अस्मिन् अमुकदेव-देवी हवनकर्माणि सांगताफल सिद्धियर्थं प्रीत्यर्थमेभिः गंधाक्षत पुष्पचन्दनताम्बूलं पुञ्गीफलम् दक्षिणा वासोभिः अमुक गोत्रं अमुकनाम आचार्य ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

उपरोक्त संकल्प के साथ १ पान के पत्ते पर रोली, चावल, सुपाड़ी, फूल, कलावा, दक्षिणा, एक अंगोछा ये सभी सामग्री आचार्य को देवें। इसके बाद पुण्यहवाचन कराया जाता है, यहाँ पुण्यहवाचन लिखना आवश्यक नहीं है।

॥ कलश पूजनम् ॥

मुख्य यजमान सहित सभी हवनकर्ताओं से विधिवत् कलश पूजन करावें। आचार्य निम्न मंत्र से कलश का आवाहन करें—

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरूशꣳस मा न आयुः प्रमोषी ॥
ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तियज्ञमिमं
तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

कलश पर नारियल स्थापित कर, कंठ में कलावा बांधें फिर रोली, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप, एक रुपया, दीप, सुपाड़ी, इलाइची (छोटी) और ताम्बूल से विधिवत् कलश का पूजन करें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर कलश की प्रार्थना करें। आचार्य निम्न श्लोक बोलें—

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्र समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्येमातृगणाः स्मृताः ॥ १ ॥

कुक्षौ तु सागरा: सर्वे, सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद:, सामवेदोह्यथर्वण: ॥२॥
अङ्गैश्च सहिता: सर्वे कलशन्तु समाश्रिता:।
अत्र गायत्री सावित्री, शान्ति पुष्टिकरीसदा ॥३॥
आयान्तु देवपूजार्थं, दुरितक्षयकारका:।
गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति ॥४॥
नर्मदे सिन्धुकावेरि, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरू।
सर्वे समुद्रा: सरितस्तीर्थानिजलदा नदा: ॥५॥
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारका:।
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा ॥६॥
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं, कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरू मे देव, प्रसन्नो भव सर्वदा ॥७॥

॥ दीप पूजनम् ॥

कलश के साथ दीप-ज्योति का भी पूजन करना आवश्यक है। मुख्य यजमान के दाहिने हाथ पर चावल-पुष्प, रोली, नैवेद्य, जल आदि रखकर विधिवत् पूजन करावें। आचार्य निम्न मंत्र बोलें-

ॐ अग्निज्योतिज्योंतिरग्नि: स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्च: स्वाहा।
सूर्योवर्च्चो ज्योतिर्वर्च्च: स्वाहा।
ज्योति: सूर्य: सूर्य्यो ज्योति: स्वाहा ॥

अब हाथ जोड़कर दीप-ज्योति की प्रार्थना करें-

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म, दीपो ज्योतिर्जनाद्रनः।
दीपो हरतु मे पापं, पूजादीप नमोऽस्तुते॥
शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम्।
शस्त्रुबुद्धि विनाशं च दीप ज्योर्तिनमोऽस्तु ते॥

॥ स्वस्ति-वाचनम्॥

मुख्य यजमान एवं सभी हवनकर्ताओं के दाहिने हाथ पर अक्षत (चावल) पुष्प, बताशा आदि देकर आचार्य निम्न मंत्रों से सस्वर स्वस्ति वाचन करें-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु
विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे
असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥१॥
ॐ देवानां भद्रा सुमर्तिर्ऋजूयतां
देवाना छरातिरभि नो निवर्ततताम्।
देवानांछसख्यमुपसेदिमा वयं देवा
न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥
ॐ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं
भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।

अर्यमणं वरूणꣳ सोममश्विना
सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥
ॐ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं
तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना
श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ ४॥
ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥
ॐ पृषदश्वा मरूतः पृश्निमातरः
शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो
विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥७॥
ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुया देवा

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि
देवहितं यदायुः ॥८॥
ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा
यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा
नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥
ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरि
क्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना
अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १० ॥
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬशान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वᳬशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥
ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरू प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१२॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
सर्वऽरिष्ट सुशान्तिर्भवतु ॥

॥ सर्वदेव-आवाहनम् ॥

विभिन्न देवी-देवता परम ब्रह्म ईश्वर के ही रूप हैं। सर्वदेव आवाहन में सबसे पहले गणेश गौरी पूजन किया जाता है, जो यहाँ क्रमशः गणेशादि सभी देवों का पूजन-आवाहन दिया जा रहा है। सभी हवनकर्ता अपने दाहिने हाथ पर अक्षत्, पुष्प, रोली आदि लेकर सर्व देव आवाहन करें।

(१) गणेश पूजनम्—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैनव विघ्नस्तस्य न जायते॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदाः॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि ततो नमस्कारं करोमि। पाद्यं, अर्घ्यं, स्नानं, गंधाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, दूर्वां, मोदकं, ऋतु फलं, ताम्बूलं, वस्त्र उपवस्त्रं, यज्ञोपवीतं, पुंगीफलं समर्पयामि।

अब सभी हवनकर्ता हाथ जोड़कर गणेश भगवान की प्रार्थना करें—

गजाननं भूतगणादि सेवितम् कपित्थ जम्बू
फल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर
पाद पंकजम्॥
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय
जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति यज्ञविभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ
नमो नमस्ते॥

(२) गौरी-पूजनम्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवःस्वः गौरी दैव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि
पूजयामि ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि॥

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

(३) षोडश मातृका-पूजनम्—

एक चौकी पर वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर 16 खाने बनाकर उसमें लाल चावल रंगे हुये की ढेरी बनावें। पश्चिमी कोने से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवहन पूजन करें। आचार्य श्लोक बोलें—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येतावृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥
ॐ श्रीषोडशमातृकाभ्यो नमः। आवाहयामि........

(४) वेदमाता गायत्री पूजनम—

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी
द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं
ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम्॥
ॐ श्री गायत्री देव्यै नमः। आवाहयामि............

(५) बुद्धिदात्री सरस्वती-पूजन—

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां, आद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तकधारिणीमऽभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्॥
ॐ सरस्वती देव्यैः नमः। आवाहयामि..........

(६) गंगाजी का पूजन—

विष्णुपादाब्जसम्भूते, गंगे त्रिपथगामिनी।
धर्मद्रवेति विख्याते, पापं मे हर जाह्नवि॥
ॐ श्री गंगा देव्यै नमः॥ पूजयामि......

(७) श्री दुर्गा जी का पूजन—

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः

स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्रय दुःखभयहारिणी का त्वदन्या

सर्वोपकार करणाय सदाद्र चित्ता॥

ॐ श्री दुर्गा देव्यै नमः॥ आवाहयामि..........

(८) माता काली देवी का पूजन—

जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा।

क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा, स्वधा नमोऽतुते॥

कालिकां तु कलातीतां, कल्याणहृदयां शिवाम्।

कल्याण जननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

ॐ कालिका देव्यै नमः॥ अवाहयामि..........

(९) श्री भैरव जी का पूजन—

करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरूण

तिमिरनील व्याल यज्ञोपवीती।

क्रतुसमय सपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति।

बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ॐ वं वटुकाय नमः। आवाहयामि...........

(१०) योगिनी-पूजनम्॥

आवाहयाम्यहं देवीर्योगिनीः परमेश्वरीः।

योगाभ्यासेन संतुष्टा परं ध्यान समन्विताः॥

दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्य ज्वालास्त्रिलोचनाः।
मूर्तिमतीर्ह्य मूर्त्ताश्च उग्राश्चैवोग्ररूपिणीः॥
अनेकभाव संयुक्ताः संसारार्णवतारिणीः।
यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः॥
ॐ चतुःष्ठि योगिनी देव्यै नमः॥ आवहयामि..........

(११) नवग्रह-पूजनम

❖ सूर्य-पूजा—

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र
रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ
सूर्याय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि.........

❖ चन्द्र पूजा—

दर्धिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यमुना तीरोद्भव आत्रेय गोत्रं शुक्लवर्ण
भो सोम इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ सोमाय नमः॥
आवाहयामि..........

❖ मंगल पूजा—

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्ति देशोद्भव भारद्वाज

गोत्रं रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ, इहतिष्ठ

ॐ भौमाय नमः, आवाहयामि............

❖ बुध-पूजन—

प्रियंङ्गुकलिकाभासं रूपेणा प्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगध देशोद्भव आत्रेय गोत्रं पीत वर्ण

भो बुध इहागच्छ, इहतिष्ठ

ॐ बुधाय नमः, आवाहयामि...........

❖ बृहस्पति-पूजन—

देवानां च मुनीनां च गुरूं काञ्चनसंनिभम्।

वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरूमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरस गोत्रं

पीत वर्ण भो गुरो इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ

ॐ बृहस्पतये नमः॥ आवाहयामि.........

❖ शुक्र-पूजन—

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावहयाम्यहम्॥

ॐ भुर्भुवः स्वः भोज कट देशोद्भव भार्गव

गोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ, इहतिष्ठ

ॐ शुक्राय नमः॥आवाहयामि............

❖ शनि-पूजन—

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप
गोत्रं कृष्ण वर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ
इहतिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः। आवाहयामि..........

❖ राहु-पूजन—

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमद्रनम।
सिंहि कागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीन सगोत्रं कृष्ण
वर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ राहवे नमः।
आवाहयामि..........

❖ केतु-पूजन—

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकागृहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनी
गोत्रं धूम्र वर्ण भो केतो। इहागच्छ इहतिष्ठ
ॐ केतवे नमः। आवाहयामि................

॥ नवग्रह प्रार्थना ॥

नवग्रह पूजन के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः॥
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।

॥अधिदेवता-पूजन॥

अधि देवताओं का पूजन नवग्रह की चौकी पर ही किया जाता है। मुख्य यजमान सपत्नीक विधिवत् पूजन करें। आचार्य श्लोक बोलें—

(१२) शिव-पूजन (सूर्य के दायें भाग में)

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम्॥
वन्दे सूर्य शशाङ्कः वह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवंशंकरम्॥
एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्।
लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
ॐ शिवशंकराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि.........

(१३) उमा-पूजन (चन्द्र के दायें भाग में)

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम।

लम्बोदरस्य जननीमुमाम वाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः। आवाहयामि..........

(१४) स्कन्ददेव-पूजन (मंगल के दायें भाग में)

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।

षणमुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुव स्वः स्कन्दाय नमः। आवाहयामि...........

(१५) विष्णु भगवान-पूजन (बुध के दायें भाग में)

शान्ताकारं भुंजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्॥

चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः। आवाहयामि...........

(१६) ब्रह्मा पूजन (बृहस्पति के दायें भाग में)

त्वं वै चतुर्मुखोब्रह्मा, सत्यलोकपितामहः।

आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थ सिद्धये॥

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।

वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः॥आवाहयामि..............

(१७) इन्द्र-पूजन (शुक्र के दायें भाग में)

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।

वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रायः नमः। आवाहयामि...........

(१८) यम-पूजन (शनि के दायें भाग में)

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।

रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। आवाहयामि................

(१९) काल पूजन (राहु के दायें भाग में)

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।

कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः। आवाहयामि..........

(२०) चित्रगुप्त-पूजन (केतु के दायें भाग में)

धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम॥

आवाहये चित्रगुप्तं लेखनी पत्र हस्तकम॥

ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्ताय नमः॥ आवाहयामि...............

॥प्रत्यधिदेवता पूजनम्॥

(२१) अग्नि आवाहन, पूजन (सूर्य के बायें भाग में)

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।

वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः। आवाहयामि................

(२२) अप् (जल) पूजन (चन्द्रमा के बायें भाग में)

आदि देव समुद्भूत जगच्छुद्धिकराः शुभाः।

ओषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। आवाहयामि...........

(२३) पृथिवी पूजन (मंगल के बायें भाग में)

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठो परिस्थिताम्।

सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भुर्भुवः स्व पृथिव्यै नमः। आवाहयामि..........

(२४) विष्णु पूजन (बुध के बायें भाग में)

शंख चक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।

किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः। आवाहयामि..........

(२५) इन्द्र पूजन (गुरु के बायें भाग में)

ऐरावतगजारूढ़ं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः। आवाहयामि...............

(२६) इन्द्राणी पूजन (शुक्र के बायें भाग में)

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानालङ्कार संयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः। आवाहयामि...............

(२७) प्रजापति पूजन (शनि के बायें भाग में)

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः। आवाहयामि...............

(२८) सर्पदेवता पूजन (राहु के बायें भाग में)

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान॥

ॐ भूर्भुवः स्वःसर्पेभ्यो नमः। आवाहयामि...............

(२९) ब्रह्मा पूजन (केतु के बायें भाग में)

हंसपृष्ठमारूढं देवतागण पूजितम्।
आवाहयाम्यहं देव ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि...............

॥ पञ्चलोकपाल-पूजनम् ॥

(नवग्रह मण्डल पर ही पूजा करें)

(३०) गणेश पूजन—

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतेः इहागच्छ, इहतिष्ठ गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ततो नमस्कारं करोमि।

(३१) दुर्गा पूजन—

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूभुर्वः स्वः दुर्गे इहागच्छ, इहतिष्ठ दुर्गायै नमः आवाहयामि।...........

(३२) वायु-पूजन—

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्॥

ॐ वायवे नमः। आवाहयामि।...........

(३३) आकाश-पूजन—

अनाकारं शब्द गुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्॥

ॐ आकाशय नमः। आवाहयामि।...........

(३४) अश्विनी कुमारो का पूजन—

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।

आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ अश्विभ्यां नमः। आवाहयामि।...........

(३५) वास्तोष्पति पूजन (वास्तु पुरुष)—

वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।

आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। आवाहयामि।...........

(३६) क्षेत्रपाल पूजन—सरसों के तेल का चौमुखा दीपक जलावें काले उद्र, दही, काजल, रोली, बताशा एक पत्ते पर रखकर पूजन के बाद दीपक हटा देवें।

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।

आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः॥

ॐ क्षेत्राधिपतये नमः। आवाह्यामि।...........

॥ दश दिक्पाल-पूजनम ॥

नवग्रहमण्डल (चौकी) के चारों ओर पूर्वादि दशों दिशाओं के अधिपति देवताओं का अक्षत-पुष्प रोली आदि से विधिवत् पूजन करें। (पूर्व में) इन्द्र-पूजन।

(३७) इन्द्रं सुरपति श्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्धयै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥
ॐ इन्द्राय: नमः। आवाहयामि।...........

(३८) अग्निदेव पूजन—पूर्व और दक्षिण के मध्य (अग्निकोण) में
त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम्।
षणनेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि।...........

(३९) यमदेव का पूजन (दक्षिण में)—
महामहिषमारूढ़ं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥
ॐ यमाय नमः। आवाहयामि।...........

(४०) निर्ऋतिका पूजन—दक्षिण और पश्चिम के मध्य (नैर्ऋत्य में)
सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञ सिद्धयै नरारूढं वर प्रदम्॥
ॐ निर्ऋतये नमः। आवाहयामि।...........

(४१) वरुणदेव-पूजन (पश्चिम में)—
शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि।...........

(४२) वायु का पूजन (पश्चिम उत्तर के मध्य (वायव्य) में)—

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥
ॐ वायवे नमः। आवाहयामि।...........

(४३) कुबेर का पूजन—

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्ष पूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥
ॐ कुबेराय नमः। आवाहयामि।...........

(४४) ईशान पूजन (ईशानकोण में) —

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्॥
ॐ ईशानाय नमः। आवाहयामि।...........

(४५) ब्रह्मा पूजन (ईशान-पूर्व के मध्य में)—

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञ संसिद्धिहेतवे॥
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि।...........

(४६) अनन्त-पूजन (नैर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में)—

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्॥
ॐ अनन्ताय नमः। आवाहयामि।...........

॥ सर्वदेव-नमस्कारः ॥

चौकी पर स्थापित सर्वदेव शक्तियों की सभी हवन कर्ता हाथ जोड़कर सिर झुकाकर नमस्कार करें।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।

ॐ मातृपितृचरण कमलेभ्यो नमः।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।

ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।

ॐ वास्तुदेवेभ्यो नमः।

ॐ कृष्ण देवताभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः।

ॐ एतत्कर्म-प्रधान अमुक देवताभ्यो नमः।

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

॥ प्रधान देव-पूजनम् ॥

प्रधान देव का अर्थ है, मुख्य देवता जिसका हवन पूजन करने ज रहे हैं। जैसे—कृष्ण, राम, गणेश, दुर्गा, हनुमान, लक्ष्मी, शिव आदि।

प्रधान देवता का आवाहन शोडषोपचार विधि से पूजन करें।

॥ वासुदेव-पूजन ॥

त्वमादि देवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धामत्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥
कस्तूरीतिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभं।
नासाग्रे वरमोक्तिकम् करतले वेणुः करेकंणम् ॥
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितोविजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥
मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहम् वन्दे परमानंद माधवम् ॥
ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय वासुदेवाय नमः।।
आवाहयामि, स्थापयामि,
पूजयामि, ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि।

॥रक्षा-विधान॥

मुख्य यजमान् बायें हाथ में अक्षत, पीली सरसों, द्रव्य, तीन धागे क कलावा लेकर दाहिने हाथ से ढककर निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करें आचार्य मंत्र बोलें—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥

स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशि पुत्रं बृहस्पतिम्॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्॥
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञ रक्षाकरान् सदा॥

अब बायें हाथ पर रखे अक्षत पीली सरसों को दाहिने हाथ से आचार्य के संकेतानुसार दशों दिशाओं में छोड़ें। आचार्य निम्न श्लोक बोलें—

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः।
दक्षिणेपद्मनाभस्तु, नैर्ॠत्यां मधुसूदनः॥
पश्चिमे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेद् ऐशान्यां हि महेश्वरः॥
उर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तरश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत् स्थानं, रक्षत्वीशोममाद्रिधृक्॥
अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छतु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाःसर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन, हवनकर्म समारभे॥

॥ कुश कण्डिका-करिणम् ॥

अग्निवेदी दक्षिण दिशा में उत्तराविमुख ब्रह्मा का आसन स्थापित करें। प्रणीता पात्र को जल से भरकर कुशा पर उत्तर दिशा में रखें, 81 कुशा लेकर चार भाग करें तत्पश्चात् 20-20 कुशा कुण्ड के क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर आदि दिशाओं में स्थापित निम्न मंत्रों से करें।

(१) पूर्व दिशा में—

ॐ प्राचीदिगग्निः अधिपतिरसितो रक्षितादित्य इषवः।
तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्योनम एभ्यो अस्तु यो।
योअस्यान्द्वेष्टि यं वयं द्विषमस्तं वो जम्भे दध्मः।

(२) दक्षिण दिशा में—

ॐ दक्षिणादिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोअधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमो इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योअस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्त वो जम्भे दध्मः॥

(३) पश्चिम दिशा में—

ॐ प्रतीची दिग्वरूणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमः
एभ्योअस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

(४) उत्तर दिशा में—

ॐ उदीची दिक् सोमोअधिपतिः
स्वजोरक्षिता शनिः इषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वी जम्भे दध्मः॥

॥हवन कुण्ड-मेखला पूजन॥

(१) पहली मेखला सफेद रंग की होती है। जिसमें ब्रह्मा का निवास है।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरुस्ताद्विसीमतः
सुरुचाो वेनऽआवः।
सुबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठा सतश्च
योनिम सतश्च विविः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि, स्थापयामि,
पूजयामि, ध्यापामि ततो नमस्कारं करोमि।

(२) दूसरी मेखला लाल होती है। जिसमें विष्णु का निवास है।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पद्म।
समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा॥
ॐ विष्णवे नमः॥ आवाहयामि.............

(३) तीसरी मेखला काले रंग की होती है। जिसमें रुद्र (शंकर) का निवास है।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोतइषवे नमः।
बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि...........

॥ अग्नि-स्थापनम् ॥

चम्मच पर कपूर रखकर दीप ज्योति से स्पर्श कर कपूर जला लेवें फिर मंत्र के साथ कुण्ड के आग्नेय कोण में स्थापित करें। आचार्य मंत्र बोलें—

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि,
पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्नि दूतं
पुरोदधे, हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँऽआसादयादिह।
ॐ अंग्नये नमः॥ आवाहयामि............

॥अग्नि प्रदीपनम्॥

चम्मच पर घी लेकर जलती अग्नि पर चारों ओर घी डालें। ताकि अग्नि प्रदीप्त हो सके, पंखे से हवा करके या कपूर आदि से अच्छी तरह हवन कुण्ड में अग्नि जला लेवें। अग्नि प्रदीप्त करते समय निम्न मंत्र बोलें—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि, त्वमिष्टा पूर्ते
स ꣳ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन, विश्वेदेवा
यजमानश्चसीदत॥

॥अग्निदेव-पूजनम्॥

अग्नि प्रदीप्त के बाद यजमान सीधे हाथ पर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि लेकर अग्नि पर छोड़ें। आचार्य निम्न श्लोक बोलें—

रक्तमाल्याम्बर धरं, रक्त पद्मासन स्थितः।
स्वाहा-स्वधा वषट्कारै, अंकितम मेष वाहनम्॥
शतमागलकं रोद्र, वह्निमावाहयाम्यहम्।
त्वं मुखं सर्व देवानां, सप्तचिर्रमितद्युते॥
आगच्छ भगवन्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधोभव्।
भूमिमातः वरूणपितः पश्चिम चरण पूर्वस्कन्ध।
उर्ध्वपाद पाताल दृष्टिगोचर, मेषध्वज प्राक्मुखम्।

॥अग्ने त्वं स्वागतो भवः॥

गंधाक्षतम्, पुष्पाणि, धूपम्,
दीपम् नैवेद्यम् समर्पयामि।

॥अग्निदेव नमस्कार॥

सभी हवनकर्ता हाथ जोड़कर अग्निदेव को प्रणाम करें आचार्य निम्न श्लोक बोलें—

श्रद्धामेधायशः प्रज्ञा विद्यां पुष्टिश्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्य वाहनः॥

भोःभोः अग्ने महाशक्ते सर्व कर्म प्रसादनम्।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सानिध्यंकुरु सर्वदा॥

॥समिधाधानम्॥

आठ-आठ अंगुल की चार समिधा घी में डुबोकर प्रत्येक मंत्र के साथ स्वाहा बोलकर हवन कुण्ड के मध्य चारों ओर रखें। आचार्य निम्न मंत्र बोलें—

(१) ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व।
चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया,
पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, अन्नाद्येन समेधय स्वाहा॥
इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम॥

(२) ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत,
घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा।
इदं अग्नये इदं न मम॥

(३) ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेद से स्वाहा।
इदं अग्नये जातवेद से इदं न मम॥

(४) ॐ तं त्वा समिदभिरङ्गिरो, घृतेन वर्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।
इदं अग्नये इदं न मम॥

॥ जल प्रसेचनम् ॥

प्रोक्षणी पात्र से जल लेकर निम्न मंत्र से अग्नि वेदी के बाहर चारों दिशाओं में डालें।

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व ॥ (इति पूर्वे)

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ (इति पश्चिमे)

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ (इति उत्तरे)

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं न पुनातु,
वाचस्पतिर्वाचं न स्वदतु ॥ (इति चतुर्द्रिक्षु)

॥ आज्याहुतिः ॥

सर्वप्रथम सात मंत्रों से घी की आहुति देवें। आचार्य निम्न मंत्र बोलें—

१. ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम ॥

२. ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम ॥

३. ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम ॥

४. ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम ॥

५. ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम ॥

६. ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम ॥

७. ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम ॥

मध्यमा-अनामिका-ऊँगलीओं पर सामग्री लेकर अंगूठे का सहारा देकर सीधे हाथ से हवि प्रदान करें।

॥ श्री गणेश-अम्बिका होम ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे, निधिनां त्वा निधिपति ँ हवामहे, वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा। इदं गणपतये इदं न मम॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः शुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ँ स्वाहा।
इदं अम्बिकायो इदं न मम॥

॥ सर्व प्रायश्चित संज्ञक वारूणी होमः॥

ॐ त्वं नोऽअग्ने वरूणस्य विद्वान देवस्य
हेडोऽवयासि सीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि
प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥
इदं अग्नीवरूणाभ्याम् इदं न मम॥

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोति
नेदिष्ठोऽअस्या उषसोव्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि
मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा।
इदं अग्नीवरूणाभ्याम् इदं न मम॥

ॐ इमं मे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरूणाय इदं न मम॥

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा
शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरूशꣳस
मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा॥
इदं वरूणाय इदं न मम॥
ॐ ये ते शतं वरूण ये सहस्रं
यज्ञिया पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे
मुञ्चतु मरुतः स्वर्का स्वाहा।
इदं वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो
देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदं न मम॥
ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च
सत्यमित्त्वमया असि।
अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ।
इदं अग्नये इदं न मम॥
ॐ उदुत्तमं वरूण पाशमस्मदवाधमं
विमध्यमꣳश्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो
अदितये स्याम स्वाहा॥
इदं वरूणायऽऽदित्यायऽदितये च इदं न मम॥
ॐ भवतन्नः समनसौ सचेत सावरेपसौ।
मा यज्ञꣳहि सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ
भवतमद्य नः स्वाहा॥ इदं जातवेदोभ्याम् इदं न मम॥

॥ नवग्रह होम ॥

सूर्य (मदार की समिधा)

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा।
इदं सूर्याय इदं न मम॥

चन्द्र (पलाश समिधा)

ॐ इमं देवाऽअसपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬराजा स्वाहा। इदं चन्द्रमाय इदं न मम॥

मंगल (खैर)

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति स्वाहा। इदं भौमाय इदं न मम॥

बुध (अपामार्ग)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सद्यस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत स्वाहा।
इदं बुधायं इदं न मम॥

गुरु (पीपल)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋृतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्वृहस्पतये त्वा स्वाहा॥

इदं बृहस्पतये इदं न मम॥

शुक्र (शमी)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥

इदं शुक्राय इदं न मम॥

शनि (दूर्वा)

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शं योरभि स्रवन्तु नः स्वाहा। इदं शनये इदं न मम॥

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।

कया शचिष्ठया वृता स्वाहा। इदं राहवे इदं न मम॥

केतु (कुशा)

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।

समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ इदं केतवे इदं न मम॥

॥अधिदेवता होम॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्स्वाहा॥

इदं त्र्यम्बकाय न मम॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुंम इषाण सर्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा। इदं उमायैन मम।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन् ।। इदं स्कन्दाय न मम ।।

ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णार्ध्रुवोऽसि।

वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।। इदं विष्णवे न मम ।।

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम स्वाहा ।। इदं ब्रह्मणे न मम ।।

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्राहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँरप मृधो।

नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम ।।

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रे स्वाहा ।। इदं यमाय न मम (उदक स्पर्श करें।)

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि।

समापो अभ्दिरग्मत समोषधी भिरोषधीः स्वाहा

इदं कालाय न मम ।।(उदक स्पर्श करें।)

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा।

इदं चित्रगुप्ताय न मम ।।

॥ प्रत्यधिदेवता होम ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे स्वाहा। इदं अद्भ्यो न मम॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ इदं पृथिव्यै न मम॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा॥ इदं विष्णवे न मम॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतुसोमः। देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम॥

ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व स्वाहा। इदं इन्द्राण्यै न मम॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ इदं प्रजापतये इदं न मम॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः स्वाहा॥
इदं सर्पेभ्यो न मम॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

॥ पंचलोकपाल देवता होम ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ᳪ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ᳪ हवामहे निधिनां त्वा निधिपति ᳪ हवामहे वसो मम॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा। इदं गणपतये न मम॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा। इद दुर्गायै न मम॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरᳪध्वर

सहस्रिणीभिरूप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ इदं वायवे इदं न मम॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशोदिग्भ्य स्वाहा। इदं आकाशाय न मम॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयाम गृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा स्वाहा। इदं अश्विभ्याम् न मम॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ इदं वास्तुपुरुषाय न मम॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्यायदेवाः स्वाहा। इदं क्षेत्रपालाय न मम॥

॥ दशदिक्पाल देवता होम ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ॐ हवे हवे सुहव ॐ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्र ॐ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यावाहमुप ब्रुवे। देवाँ-२ आ सादयादिह स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।

स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे

स्वाहा। इदं यमाय न मम॥ (उदक स्पर्श करे)

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा। इदं निर्ऋते न मम॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्तेयजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरूणेह बोध्युरूश ॐ स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरूणाय न मम॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ॐ सहस्रिणीभिरूप याहि यज्ञम। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा। इदं वायवे न मम॥

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषा कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा स्वाहा। इदं कुबेराय न मम॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे

हूमहेवयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा। इदं ईशानाय न मम॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा। इदं अनन्ताय न मम॥

॥अथपितामहादि-होम॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः यश ७३ सते स्तुवते धायि वज्रेऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवा स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा। इदं शिवाय न मम॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित् स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम॥

ॐ भूताय त्वानारातये स्वरभिविष्ये यन्द ७३ हंन्तादुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वानाभौ सादयाम्य दित्याऽउपस्त्येऽग्नेहव्य रक्ष स्वाहा इदं भूतेभ्य न मम॥

ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोर वद्धयम् तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्योषथासत् स्वाहा। इदं विश्व कर्मणे न मम॥

॥ वास्तु-होम ॥

ॐ शिखिने स्वाहा। पर्जन्याय स्वाहा। जयन्ताय स्वाहा। कुलिशायुधाय स्वाहा। सूर्याय स्वाहा। सत्याय स्वाहा। भृशाय स्वाहा। आकाशाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। पूष्णे स्वाहा। वितथाय स्वाहा। गृहक्षताय स्वाहा॥ यमाय स्वाहा॥ गर्न्धवाय स्वाहा। भृङ्गराजाय स्वाहा॥ मृगाय स्वाहा। पितृभ्य स्वाहा। दौवारिकाय स्वाहा। सुग्रीवाय स्वाहा। पुष्पदन्ताय स्वाहा। वरूणाय स्वाहा। असुराय स्वाहा। शेषाय स्वाहा। पापय स्वाहा। रोगाय स्वाहा। अहये स्वाहा। मुख्याय स्वाहा। भल्लाटाय स्वाहा। सोमाय स्वाहा। सर्पेभ्य स्वाहा। अदित्यै स्वाहा। दित्यै स्वाहा। अद्भ्य स्वाहा। सवित्राय स्वाहा। जयाय स्वाहा। रुद्राय स्वाहा। अर्यम्णे स्वाहा। सवित्रे स्वाहा। विवस्वते स्वाहा। विबुधाधिपाय स्वाहा। मित्राय स्वाहा। राजयक्ष्मणे स्वाहा। पृथ्वीधराय स्वाहा। आपवत्साय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। चरक्यै स्वाहा। विदार्यै स्वाहा। पूतनायै स्वाहा। पापराक्षस्यै स्वाहा। स्कन्दाय स्वाहा। अर्यम्णे स्वाहा। जृम्भकाय स्वाहा॥ पिलिपिच्छाय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। यमाय स्वाहा। निर्ऋतये स्वाहा। वरूणाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। सोमाय स्वाहा। ईशानाय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। अनन्ताय स्वाहा॥

॥ सर्वतोभद्र-होम ॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। सोमाय स्वाहा। ईशनाय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। यमाय स्वाहा। निर्ऋतये स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। अष्टवसुभ्यः स्वाहा। एकादशरुद्रेभ्य स्वाहा। द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। अश्विभ्यां स्वाहा। सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। भूतनागेभ्य स्वाहा। गन्धर्वाप्सरोभ्य स्वाहा। स्कन्दाय स्वाहा। वृषभाय स्वाहा। शूलाय स्वाहा। महाकलाय स्वाहा। दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। विष्णवे स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा। गणपतये स्वाहा। अद्भ्यः स्वाहा। मरुद्भ्य स्वाहा। पृथिव्यै स्वाहा। गंगानदीभ्य स्वाहा। सप्त सागरेभ्यः स्वाहा। भैरवे स्वाहा। गदायै स्वाहा। त्रिशूलाय स्वाहा। वज्राय स्वाहा। शक्तये स्वाहा। दण्डाय स्वाहा। खड्गाय स्वाहा। पाशाय स्वाहा। अङ्कुशाय स्वाहा। गौतमाय स्वाहा। भरद्वाजाय स्वाहा। विश्वामित्राय स्वाहा। कश्यपाय स्वाहा। जगदग्नये स्वाहा वसिष्ठाय स्वाहा। अन्तये स्वाहा। अरून्धत्यै स्वाहा। ऐन्द्राण्यै स्वाहा। कौमार्यै स्वाहा। ब्राह्ममन्यै स्वाहा। वाराह्यै स्वाहा। चामुण्डायै स्वाहा। वैष्णवै स्वाहा। माहेश्वर्यै स्वाहा। वैनायक्यै स्वाहा॥

॥ चतुःषष्टियोगिनी-होम ॥

ॐ दिव्य योगाये स्वाहा। महायोगाये स्वाहा। सिद्धयोगाये स्वाहा। महेश्वर्यै स्वाहा। पिशाचिन्ये स्वाहा। डाकिन्ये स्वाहा। कालरात्र्यै स्वाहा।।

निशाचर्यै स्वाहा। कंकाल्यै स्वाहा। रौद्रवेताल्यै स्वाहा। हुँकार्यै स्वाहा। उर्ध्व केश्यै स्वाहा। विरूपाक्ष्यै स्वाहा। शुष्काङ्ग्यै स्वाहा। नरभोजिन्यै स्वाहा। फट्कार्यै स्वाहा। वीरभद्राये स्वाहा। धूम्राक्ष्यै स्वाहा। कलहप्रियाये स्वाहा। रक्ताक्ष्यै स्वाहा। राक्षस्यै स्वाहा। घोराये स्वाहा। विश्वरूपाये स्वाहा। भयङ्कर्यै स्वाहा। कामाक्ष्यै स्वाहा। उग्रचामुण्डाये स्वाहा। भीषणाये स्वाहा। त्रिपुरान्तकाये स्वाहा। वीरकौमारिकाये स्वाहा। चण्ड्यै स्वाहा। वाराहयै स्वाहा। मुण्डधारिण्यै स्वाहा। भैरव्यै स्वाहा। हस्तिन्यै स्वाहा। क्रोधार्दुमुख्यै स्वाहा। प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। खट्वाङ्गदीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा। मालत्यै स्वाहा। मन्त्रयोगिन्यै स्वाहा। अस्थिन्यै स्वाहा। चक्रिण्यै स्वाहा। ग्राहाये स्वाहा। भुवनेश्वर्यै स्वाहा। कण्टक्यै स्वाहा। कारक्यै स्वाहा। शुभ्राये स्वाहा। क्रियाये स्वाहा। दूत्यै स्वाहा। करालिन्यै स्वाहा। शंखिन्यै स्वाहा। पद्मिन्यै स्वाहा। क्षीराये स्वाहा। असन्धाये स्वाहा। प्रहारिण्यै स्वाहा। लक्ष्म्यै स्वाहा। कामुक्यै स्वाहा। लोलाये स्वाहा। काकदृष्ट्यै स्वाहा। अधोमुख्यै स्वाहा। धूर्जट्यै स्वाहा। मालिन्यै स्वाहा। घोराये स्वाहा। कपाल्यै स्वाहा। विषभोजिन्यै स्वाहा। इदं विषभोजिन्यै न मम॥

॥ दुर्गा-होम ॥

ॐ सत्यै स्वाहा। साध्वयै स्वाहा। भवप्रीतायै स्वाहा। भवान्यै स्वाहा। भवमोचिन्यै स्वाहा। आर्यायै स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। जयायै स्वाहा। आद्यायै स्वाहा। त्रिनेत्रायै स्वाहा। शूलधारिण्यै स्वाहा। पिनाकधारिण्यै स्वाहा। चित्रायै स्वाहा। चण्डघण्टायै स्वाहा। महातपायै स्वाहा। मने स्वाहा। बुध्यै स्वाहा। अहंकारायै स्वहा। चित्तरूपायै स्वाहा। चितायै स्वाहा। चित्यै स्वाहा। सर्वमन्त्रमयै स्वाहा। सत्तायै स्वाहा। सत्यानन्दस्वरूपिण्यै स्वाहा। अनन्तायै स्वाहा। भाविन्यै स्वाहा। भाव्यायै स्वाहा। भव्यायै स्वाहा। अभव्यायै स्वाहा। सदागत्यै स्वाहा। शाम्भवियै स्वाहा। देवमातायै स्वाहा। चिन्तायै स्वाहा। रत्नप्रियायै स्वाहा। सर्वविद्यायै स्वाहा। दक्षकन्यायै स्वाहा। दक्षयज्ञविनाशिन्यै स्वाहा। अपर्णायै स्वाहा। अनेकवर्णायै स्वाहा। पाटलायै स्वाहा। पाटलावत्यै स्वाहा। पट्टाम्बरपरीधानायै स्वाहा। कलमञ्जीररञ्जिन्यै स्वाहा। अमेयविक्रमायै स्वाहा। क्रूरायै स्वाहा। सुन्दरियै स्वाहा। सुरसुन्दरियै स्वाहा। वनदुर्गायै स्वाहा। मातंगियै स्वाहा। मतंगमुनिपूजितायै स्वाहा। ब्राह्मन्यै स्वाहा। माहेश्वर्यै स्वाहा। ऐन्द्रण्यै स्वाहा। कौमार्यै स्वाहा। वैष्णव्यै स्वाहा। चामुण्डायै स्वाहा। वाराह्यै स्वाहा। लक्ष्म्यै स्वाहा। पुरूषाकृत्यै स्वाहा। विमलायै स्वाहा। उत्कर्षिण्यै स्वाहा। ज्ञानायै स्वाहा। क्रियायै स्वाहा। नित्यायै स्वाहा। बुद्धिदायै स्वाहा। बहुलायै स्वाहा। बहुलप्रेमायै स्वाहा।

सर्ववाहनवाहनायै स्वाहा। निशुम्भशुम्भ हननन्यै स्वाहा। महिषासुरमद्रिन्यै स्वाहा। मधुकैटभ हन्त्यै स्वाहा। चण्डमुण्ड विनाशिन्यै स्वाहा। सर्व सुरविनाशायै स्वाहा।, सर्वदानवघातिन्यै स्वाहा। सर्वशास्त्रमयि स्वाहा। अनेकास्त्रधारिण्यै स्वाहा। कुमारियै स्वाहा। एककन्यायै स्वाहा। कैशोरियै स्वाहा। युवत्यै स्वाहा। यत्यै स्वाहा। अप्रौढ़ायै स्वाहा। प्रौढायै स्वाहा। वृद्धमातायै स्वाहा। बलप्रदायै स्वाहा। महोदरियै स्वाहा। मुक्तकैश्यै स्वाहा। घोररूपायै स्वाहा। महाबलायै स्वाहा। अग्निज्वालायै स्वाहा। रौद्रमुख्यै स्वाहा। कालरात्र्यै स्वाहा। तपश्विन्यै स्वाहा। नारायणायै स्वाहा। भद्रकाल्यै स्वाहा।

विष्णुमायायै स्वाहा। जलोदर्यै स्वाहा। शिवदूत्यै स्वाहा। कालरात्रयै स्वाहा। अनन्तायै स्वाहा। परमेश्वयै स्वाहा। कात्यायन्यै स्वाहा। सावित्र्यै स्वाहा। प्रत्यक्षायै स्वाहा। ब्रह्मवादिन्यै स्वाहा। इदं ब्रह्मवादिन्यै स्वाहा।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै स्वाहा

इदं चामुण्डायै न मम

(लौंग अथवा जायफल से आहुति देवें।)

ॐ नाहरपुरशक्तिपीठेश्वर सहितांनाहरपुर पीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। इदं दुर्गा देव्यै न मम॥

॥ क्षेत्रपाल होम ॥

ॐ अजराय स्वाहा। व्यापकाय स्वाहा। इन्द्र चौराय स्वाहा। इन्द्रर्मूतये स्वाहा। उक्ष्णे स्वाहा। कूष्माण्डाय स्वाहा। वरूणाय स्वाहा। वटुकाय स्वाहा। विमुक्ताय स्वाहा। लिप्तकाय स्वाहा। नीललोकाय स्वाहा। एकदूष्टाय स्वाहा। ऐरावताय स्वाहा। ओषधीघ्नाय स्वाहा। बन्धनाय स्वाहा। दिव्यकराय स्वाहा। कम्बलाय स्वाहा। भीषणाय स्वाहा। गवयाय स्वाहा। घण्टाय स्वाहा। व्यालाय स्वाहा। अंशवे स्वाहा। चन्द्रवारूणाय स्वाहा। घटाटोपाय स्वाहा। जटिलाय स्वाहा। क्रतवे स्वाहा। घण्टेश्वराय स्वाहा। विकटाय स्वाहा। मणिमानाय स्वाहा। गणबन्धाय स्वाहा। मुण्डाय स्वाहा। बर्बूकराय स्वाहा। सुधापाय स्वाहा। वैनाय स्वाहा। पवनाय स्वाहा। ढुण्ढिकरणाय स्वाहा। स्थविराय स्वाहा। दन्तुराय स्वाहा। धनदाय स्वाहा। नागकर्णाय स्वाहा। महाबलाय स्वाहा। फेत्काराय स्वाहा। सिंहाय स्वाहा। मृगाय स्वाहा। यक्षाय स्वाहा। मेघवाहनाय स्वाहा। तीक्ष्णाय स्वाहा। अमलाय स्वाहा। शुक्राय स्वाहा।

॥ लिंगतोभद्रदेवता होम ॥

ॐ असिताङ्ग भैरवाय स्वाहा। ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा। ॐ क्रोध भैरवाय स्वाहा। ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा। ॐ उन्मत्त भैरवाय स्वाहा। ॐ कपालभैरवाय स्वाहा। ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा।

ॐ संहार भैरवाय स्वाहा।

॥ षोडश मातृका होम ॥

ॐ गौर्यै स्वाहा। पद्मायै स्वाहा। शच्यैस्वाहा। मेधायै स्वाहा। सावित्र्यै स्वाहा। विजयायै स्वाहा। जयायै स्वाहा। देवसेनायै स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। स्वाहायै स्वाहा। मातृभ्य स्वाहा। लोकमातृभ्य स्वाहा। धृत्यै स्वाहा। पुष्ट्यै स्वाहा। तुष्ट्यै स्वाहा। आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा।

॥घृत मातृका होम ॥

ॐ श्रियै स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ धृत्यै स्वाहा। ॐ मेधायै स्वाहा।

ॐ स्वाहायै स्वाहा। ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।

॥ अघोर होम ॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा।

॥ भागवत-होम ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा।
इदं वासुदेवाय इदं न मम॥
ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णु:प्रचोदयात् स्वाहा। इदं वासुदेवाय न मम॥
ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन-
वल्लभाय स्वाहा। इदं गोपालाय न मम॥
ॐ सच्चिदानंदरूपाय विश्वोत्पत्त्यादि हेतवे।
तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः स्वाहा।
इदं कृष्णाय न मम॥
ॐ क्लीं श्रीं राधिकायै नमः स्वाहा।
इदं राधिकायै न मम॥
ॐ क्लीं कालिन्दी भेदनाय संकर्षणाय स्वाहा।
इदं संकर्षणाय न मम॥
ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय वासुदेवाय
संकर्षणाय सहस्रवदनाय महानन्ताय स्वाहा।
इदं बलभद्राय न मम॥
ॐ नमो भगवत्यै कालिन्दिनन्दिन्यै सुर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्री कृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा।
इदं यमुनादेव्यै न मम॥
ॐ नमोऽस्तुते व्यास विशाल बुद्धे फुल्लारविन्दायत पत्रनेत्रः।

येन त्वया भारतैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीप स्वाहा।

इदं व्यासाय न मम।

ॐ शुकरूप प्रबोधज्ञ सर्वशास्त्र विशारद। एत्कथा प्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय स्वाहा॥

इदं शुकदेवाय न मम।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेनाय महाबलाय स्वाहा।

इदं हनुमते न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ रुद्रवे स्वाहा। ॐ नारदाय स्वाहा। ॐ सूताय स्वाहा। ॐ शौनकादाय स्वाहा। गौतमाय स्वाहा। भरद्वाजाय स्वाहा। विश्वामित्राय स्वाहा। कश्यपाय स्वाहा। जमद्ग्नये स्वाहा। वसिष्ठाय स्वाहा। अत्रये स्वाहा। नन्दगोप कुमाराय स्वाहा। नन्दाय स्वाहा। यशोदायै स्वाहा। वसुदेवाय स्वाहा। देवकन्यै स्वाहा। ध्रुवाय स्वाहा। प्रहलादाय स्वाहा। हरिश्चन्द्राय स्वाहा। अम्बरीषाय स्वाहा। विदुराय स्वाहा। भीष्माय स्वाहा। सुदामाय स्वाहा। परीक्षताय स्वाहा। ऋषभदेवाय स्वाहा। कपिलदेवाय स्वाहा। देवहूत्यैस्वाहा। कद्रमाय स्वाहा। वामनाय स्वाहा। नृसिंहाय स्वाहा। कूर्माय स्वाहा। हयग्रीवाय स्वाहा। कच्छपाय स्वाहा। परशुरामाय स्वाहा। हरये स्वाहा।

॥हनुमत्-होम॥

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय विश्वरूपाय अमितविक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्यकोटि समप्रभाय रामदूताय स्वाहा। इदं हनुमते इदं न मम॥

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय रामसेवकाय रामभक्तितत्पराय रामहृदयाय लक्ष्मणशक्ति भेदनिवारणाय लक्ष्मणरक्षकाय दुष्टनिर्वहणाय रामदूताय स्वाहा।

। इदं हनुमते इदं न मम॥

ॐ नमो हनुमते रुद्रवताराय सर्वशस्त्रु संहरणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा। इदं हनुमते इदं न मम॥

॥ विष्णु होम॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमि ७ऺ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ पुरुषएवेद ७ऺ सर्वं यद्भूत यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति स्वाहा।

इदं विष्णवे न मम॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि स्वाहा इदं विष्णवे न मम॥

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः स्वाहा।
इदं विष्णवे न मम॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँचक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्यश्च ये स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वाहुत ऋृचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ꣳ सिं जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः॥
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता
अजावयः स्वाहा। इदं विष्णवे न मम।

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋृषयश्च ये स्वाहा,
इदं विष्णवे न मम॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्

मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमरूपादा उच्यते स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भया ७ शूद्रो अजायत स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत

स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत्। पद्भ्यां भूमिद्रिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् स्वाहा। इदं विष्णवे इदं न मम॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः स्वाहा। इदं विष्णवे इदं न मम॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्, पुरुषंपशुम् स्वाहा। इदं विष्णवे इदं न मम॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकंमहिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः स्वाहा इदं विष्णवे इदं न मम॥

॥ सरस्वती होम ॥

ॐ सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिष ७ स्वाहा। इदं मेधायै इदं न मम।

ॐ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा।
इदं मेधायै इदं न मम॥

ॐ मेधां मे वरूणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा। इदं मेधायै इदं न मम॥

ॐ इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा।
इदं मेधायै इदं न मम॥

ॐ मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्य माना।
त्वया जुष्टा नुदमाना, दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।
स्वाहा। इदं मेधायै इदं न मम॥

ॐ त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया
ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया।
त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व
द्रविणो न मेधे स्वाहा। इदं मेधायै इदं न मम॥

ॐ मेधां म इन्द्रो दधातु मेघां देवी सरस्वती मेधां मे

अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा स्वाहा॥

इदं मेधायै स्वाहा॥

ॐ अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः। दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषतां स्वाहा। इदं सरस्वत्यैः इदं न मम॥

ॐ आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्य वर्णा जगती जगम्या।

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् स्वाहा।

इदं सरस्वत्यै न मम॥

॥ गायत्री होम॥

१. ॐ एक दंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात् स्वाहा।

२. ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे, वज्र नखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् स्वाहा।

३. ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

४. ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् स्वाहा।

५. ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् स्वाहा।

६. ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्णप्रियायै धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात् स्वाहा।

७. ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् स्वाहा।

८. ॐ महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् स्वाहा।

९. ॐ सहस्रनेत्राय विद्महे, वज्रहस्ताय धीमहि।
तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् स्वाहा।

१०. ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् स्वाहा।

११. ॐ गिरिजायै विद्महे, शिव प्रियायै धीमहि।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् स्वाहा।

१२. ॐ अञ्जनी सुताय विद्महे, वायु पुत्राय धीमहि।
तन्नो मारूतिः प्रचोदयात् स्वाहा।

१३. ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्र मूर्त्यै धीमहि।
तन्नो पृथ्वीः प्रचोदयात् स्वाहा।

१४. ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि।
तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा।

१५. ॐ दाशरथये विद्महे, सीता वल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात् स्वाहा।

१६. ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि।
तन्नो सीता प्रचोदयात् स्वाहा।

१७. ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे, अमृतत्त्वाय धीमहि।
तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात् स्वाहा।

१८. ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि।
तन्नो यमः प्रचोदयात् स्वाहा।

१९. ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढ़ाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्माः प्रचोदयात् स्वाहा।

२०. ॐ जलबिम्बाय विद्महे, नीलपुरुषाय धीमहि।
तन्नो वरुणः प्रचोदयात् स्वाहा।

२१. ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीभहि।
तन्नो नारायण प्रचोदयात् स्वाहा।

२२. ॐ वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवाय धीमहि।
तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात् स्वाहा।

२३. ॐ परमहंसाय विदमहे, महाहंसाय धीमहि।
तन्नो हंस प्रचोदयात् स्वाहा।

२४. ॐ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि।
तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् स्वाहा।

।। प्रधान होम ।।

प्रधान होम का अर्थ है जिस देवता का हवन कर रहे हैं उसका विधिवत् शोडषोपचार विधि से पूजन-यजन करके तत्पश्चात् उसी के वेद मंत्र अथवा पुराण मंत्र से होम ५, ७, ११, २६, ३१, ५१, १०८ बार आहूति देवें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात स्वाहा।
इदं गायत्र्यै इदं न मम॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा।
इदं वासुदेवाय इदं न मम॥

ॐ नमो नारायणाय स्वाहा। इदं नारायणाय न मम॥

ॐ नमः शिवाय स्वाहा। इदं शिवाय इदं न मम॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।
इदं चामुण्डायै इदं न मम।

।। स्विष्टकृत होम ।।

यह आहूति केवल मुख्य यजमान घी होमने वाला ही नैवेद्य (मिष्ठान) की आहूति मंत्र के साथ देता है।

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यून मिहाकरम् अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।

इदं स्विष्ट कृते इदं न मम॥

॥ पूर्णाहूति होम ॥

मुख्य यजमान सहित सब लोग खड़े होकर अपनी श्रद्धानुसार गोला, सुपारी, नारियल, व शेष सामग्री दाहिने हाथ पर लेकर मंत्र के साथ 3 बार छोड़ें।

नोट—गोला काटकर न देवें क्योंकि काटना एक बलि प्रथा है। केवल कलावा लपेट कर रोली से वरण कर लें। पान, सुपारी, लौंग, कपूर, मिष्ठान गोला आदि अपने सीधे हाथ पर लेकर मंत्र के अन्त में स्वाहा बोलकर छोड़ें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते॥
ॐ पूर्णादर्वि परापत् सुपूर्णा पुनरापत
वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ꣳ शतकृतो स्वाहा॥
ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा॥ १॥

॥ वसोर्धारा ॥

सभी लोग बैठ जायें तत्पश्चात् मुख्य यजमान घी का पात्र दाहिने हाथ में लेकर उल्टी चम्मच बायें हाथ से पकड़कर उस पर घृत धारा छोड़ें—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष स्वाहा॥

॥ बर्हिहोमः ॥

अब कुण्ड के पास कुश कण्डिका के समय जो कुशा चारों ओर बिछायी गयी थी, उन्हें एकत्र करके घृत में डुबोकर मुख्य यजमान आहुति देवें।

ॐ देवागान्तु विदोगातुं वित्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञ ७ स्वाहा व्वातेधाः स्वाहा।

॥ ब्रह्मग्रन्थि-विमोकः ॥

५१ कुशाओं की गाँठ लगाकर जो ब्रह्मा की स्थापना ब्रह्मा वरण के समय रखी थी उसे खोल देवें।

॥ घृत अवघ्राण ॥

घृत आहुति के बाद जो एक बूँद प्रणीता पात्र (जल) में गिराते गये थे, उसी पात्र से जल की कुछ बूँदें हथेली पर लेकर मंत्रों के साथ दोनों हाथों से रगड़ लेवें। तत्पश्चात् अग्निदेव पर दूरी से तपायें फिर दोनों हाथों को मुखमण्डल की ओर ले जाते हुए सुगंधित हाथों को तीन बार सूँघ लेवें।

ॐ तनूपाअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि॥
ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि॥
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि॥
ॐ अग्नेयन्मे तन्वाऽऊनन्तन्म आपृण॥
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु॥
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु॥
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवा वाधतां पुष्करस्रजौ॥

॥ भस्मधारणम् ॥

हवन कुण्ड से ठण्डी भस्म लेकर किसी पात्र में रख लें, फिर मंत्र से आचार्य के संकेतानुसार अंगों पर लगावें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (मस्तक पर)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। (कंठ पर)

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहु मूले। (सीधी भुजा से)

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि। (हृदय में)

॥ बलिवैश्व-होम ॥

रसोई (पाकशाला) में जो भी व्यंजन बने हों उन्हें एक पात्र में रख लेवें। नमकीन पदार्थ का यज्ञ में भोग नहीं लगता है। मिष्ठान युक्त पदार्थों का सर्वप्रथम यज्ञ भगवान का भोग लगावें। देव बलि, पंचबलि, आदि के लिए अलग-अलग पत्तल पर प्रसाद रखें।

कोदों, चना, उड़द, मसूर, कुलथी ये अन्न निषेध हैं। नमकीन पदार्थों का भोग कुण्ड के उत्तर दिशा में लगावें। बलिवैश्व देव सम्पन्न के बाद यज्ञ भगवान (ठाकुरजी) का भोग लगावें।

ॐ भूपत्तयै स्वाहा। इदं भूपत्तयै इदं न मम।

ॐ भुवनपतये स्वाहा। इदं भुवनपतये इदं न मम।

ॐ भूतानां पतये स्वाहा। इदं भूतानांपतये इदं न मम।

ॐ प्राणाय स्वाहा। इदं प्राणाय इदं न मम।

ॐ अपानाय स्वाहा। इदं अपानाय इदं न मम।

ॐ व्यानाय स्वाहा। इदं व्यानाय इदं न मम।

ॐ उदानाय स्वाहा। इदं उदानाय इदं न मम।

ॐ समानाय स्वाहा। इदं समानाय इदं न मम।

ॐ त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये॥

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

अब सभी हवन कर्ता हाथ जोड़कर क्षमा-प्रार्थना करें।

आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादित श्रुतिः ॥

॥ साष्टांग नमस्कार ॥

अब सभी हवन कर्ता सिर झुकाकर दण्डवत् प्रणाम करें।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षि शिरोरूबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटि युगधारिणे नमः।

॥ यज्ञ भगवान-स्तुति ॥

हे यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए॥
वेद की बोलें ऋचाऐं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचाऐं, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें॥
कामना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नरनारि की॥
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हो, शुभ गन्ध को धारण किए॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हों।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करूणा रूप करूणा, आपकी सब पर रहे॥

॥ शान्ति अभिसिंचन ॥

हवन वेदी पर रखे प्रधान कलश से जल लेकर आम्र पल्लव से सभी हवनकर्ताओं के सिर पर मंत्र से आचार्य जल छिड़कें—

नोट—यजमान पत्नी को अभिषेक के समय वाम भाग में बिठावै।

ॐ सं मा सिञ्चन्तु मरूतः सं पूषा सं वृहस्पतिः।
सं मायमग्निः सिञ्चन्तु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे॥ १॥

ॐ सं मा सिञ्चन्त्वादित्याः सं मा सिञ्चन्त्वग्नयः।
इन्द्रःसमस्मान् सिञ्चतु प्रजया न धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥ २॥
ॐ सं मा सिञ्चन्त्वरूषः समर्का ऋषयश्च ये।
पूषा समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥ ३॥
ॐ सं मा सिञ्चन्तु गन्धर्वाप्सरसः सं मा सिञ्चन्तु देवताः।
भगः समस्यान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥ ४॥
ॐ सं मा सिञ्चतु पृथिवी सं मा सिञ्चन्तु या दिवः।
अन्तरिक्षं समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥५॥
ॐ सं मा सिञ्चन्तु प्रदिशः सं मा सिञ्चन्तु या दिशः।
आशाः समस्मान् सिञ्चन्तु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥६॥
ॐ सं मा सिञ्चन्तु कृषयः सं मा सिञ्चन्त्वोषधिः।
सोमः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥ ७॥
ॐ सं मा सिञ्चन्तु नद्यः सं मा सिञ्चन्तु सिन्धवः।
समुद्रः समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घमायुः कृणोतु मे॥८॥
ॐ सं मा सिञ्चन्त्वापः सं मा सिञ्चन्तु कृष्टयः।
सत्यं समस्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च।
दीर्घयायुः कृणोतु मे॥९॥
कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदाः। यह ३ बार कहें।

॥आचार्य दक्षिणा॥

मंत्रहीन एवं दक्षिणाहीन हवन तामसी तथा विनाशकारी होता है। इसलिए आचार्य की दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। दक्षिणा के सम्बन्ध में लिखा है कि—

वस्त्रयुग्मं महावस्त्रं, केयूरं कर्ण भूषणम्।
अँगुलिभूषणश्चैव, मणिबन्धस्य भूषणम्॥
कण्ठाभरण युक्तानि, प्रारम्भे धर्म कर्मणः।
पुरोहिताय दत्वाऽथ, ऋत्विग्भ्यश्चापि दापयेत्॥

धोती, दुपट्टा, दुशाला, कानों के आभूषण, कर्ण फूल, अंगूठी, कंगन, गले का हार, यह वस्तु धर्मकर्म (हवन) आरम्भ करते ही पुरोहित (आचार्य) को दान करें। "**दक्षिणा च फल प्रदा**" दक्षिणा ही फल प्रदान करने वाली है।

सुवर्ण परमं दानं सुवर्णं दक्षिणा परा।
सर्वेषामेव दानानां सुवर्ण दक्षिणोष्यते॥

सुवर्ण दान ही परम दान है। सोने की ही दक्षिणा विशेष दक्षिणा है।

एकादश स्वर्ण निष्कः प्रदातव्या सदक्षिणाः॥

हवन कराने वाले आचार्य को ११ सोने की अशर्फी देनी चाहिए।

"सर्वेषां कर्मणं देवि सारभूता च दक्षिणा"
सब कर्मों में दक्षिणा ही सार है।

दक्षिणा देश, काल, परिस्थिति के अनुसार यजमान की क्षमता पर निर्भर है। यजमान श्रद्धा से जो कुछ भी दक्षिणा देवें, आचार्य उसे सहर्ष स्वीकार करें। "**असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः**" असन्तोषी द्विज शीघ्र ही पतन को प्राप्त होता है। मुख्य में श्रद्धा ही दक्षिणा है।

!! संकल्प!!

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णु, श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवृतमानस्य अद्यः श्री ब्रह्मणेऽहिन् द्वितिय परार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पै, वैवस्वतमन्वन्तरे भूलोके भरतखण्डे जम्बूद्वीपे भारत वर्षे कलियुगे प्रथम चरणे आर्यावर्तेक देशान्तर्गते उत्तर प्रदेशे आगरा मण्डले एटा जनपदे जलेसर पुण्य क्षेत्रे ग्राम नाहरपुर शुभ स्थाने शुभ संवत् २०६१ शालिवाहन शाके...........तत्र वर्षे मासानां मासोत्तम मासे..........मासे............पक्षे...............तिथौ.......... वासरे तदानुसारेण दिनांके................ ख्रीष्टवर्षे............ गोत्रोत्पन्न.................नामाहंमम इह जन्म जन्मान्तरे वा सर्वपापक्षय पूर्वक दीर्घायु विपुल धनधान्यं पुत्रपोत्राद्य वाच्छिननं सन्तति वृद्धि, स्थिरलक्ष्मी, कीर्ति लाभः भविष्य उज्जवल अभीष्ट कामना पूर्तये च प्रबल पुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलश गणेशादि आवाहित देवता पूजन पूर्वकं आचार्य दक्षिणां संकल्पं करिष्ये।

॥आशीर्वाद मन्त्राः॥

आचार्य दक्षिणा के बाद आशीर्ष वचन कहें।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्य परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशा।
गोब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥

।। तिलक, फलदान एवं आरती ।।

अब आचार्य मुख्य यजमान एवं विशिष्ट जनों का तिलक कर उन्हें मिष्ठान व फल गोदी में दान करें और उनके ऊपर पुष्पों की वर्षा करें, ढेर सारा आशीष देवें।

आरती सर्वप्रथम इष्टदेव के चरणों में चार बार, नाभिदेश में दो बार, मुखमण्डल पर एक बार घुमावें (उतारें) सात बार समस्त अंगों पर उतारें, यह आरती की विधि है।

।।श्री यज्ञ पुरुष भगवान की आरती ।।

आरती यज्ञपुरुष की कीजै।
इनको अपना सर्वसु दीजै।। टेक ।।
सुख स्वरूप आकूति नंदन।
तेज प्रताप महा जग वंदन।
मनभावन हैं रोली चंदन।।
रुचि अनुरूप दक्षिणा दीजै।। १ ।।
रुचि पिता है प्रभु तुम्हारे।
तुम ही सबके पालन हारे।
काटो संकट आजु हमारे।।
घीय सहित आहुति दीजै।। २ ।।
सुरनर तुमको सबहि ध्यावै।
बार-बार यह विनय सुनावै।।
भगतन के सब रोग नसावै।।
आदर से परिक्रमा की जै।। ३ ।।
तुम हो विष्णु के अवतारी।
जै-जै होती सृष्टि तुम्हारी।

वर्षा अन्न के हो अधिकारी॥
करिके जग्य सुधारस पीजै॥४॥
तुम बिन देव भोग नहि पायें।
तुम्हरे पुत्र याम कहिलायें।
भगतन के सबपाप मिटायें।
वेद मंत्र से स्तुति कीजै॥ ५॥
रामसेवक कथि आरति गावैं।
सबका जीवन सफल बनावैं।
भगत सदा सुख उर में पावैं।
यज्ञ प्रभु की आरती लीजै॥ ६॥

॥ जयघोष॥

१. कृष्ण बलदेव महाराज की जय।
२. शंकर भगवान की जय।
३. राजा रामचन्द्र की जय।
४. हनुमान जी महाराज की जय।
५. यज्ञ भगवान की जय।
६. वेद भगवान की जय।
७. श्री दुर्गे मैया की जय।
८. भूदेवी माता की जय।
९. भारतमाता की जय।
१०. गौमाता की जय।
११. तुलसी मैया की जय।
१२. यमुना मैया की जय।
१३. गंगा मैया की जय।

१४. सत्य सनातन धर्म की जय।
१५. भारतीय संस्कृति की जय।
१६. श्रीमद् भगवत् गीता की जय।
१७. श्रीमद् भागवत महापुराण की जय।
१८. पूज्य गुरूदेव की जय।
१९. पूज्य माता-पिता की जय।
२०. सभी नगर निवासियों की जय।
२१. सभी क्षेत्रवासियों की जय।
२२. देश की रक्षा कौन करेगा हम करेंगे।
२३. धर्म की रक्षा कौन करेगा हम करेंगे।
२४. कर्त्तव्य पालन कौन करेगा हम करेंगे।
२५. मानव भाई एक समान।
२६. जाति धर्म सब एक समान।
२७. नर और नारी एक समान।
२८. धर्म की जय हो।
२९. अधर्म का नाश हो।
३०. प्राणियों में सद्भावना हो।
विश्व का कल्याण हो।
३१. सभी सन्तों की जय हो।
३२. भ्रष्टाचार का अन्त हो। दहेज प्रथा बन्द हो।
३३. कुरुतियों का अन्त हो।
मृत्युभोज बन्द हो।
३४. वासुदेव श्रीकृष्ण की जय हो।
३५. वन्दे कृष्णं जगद्गुरूम्।
३६. बोलो जय-जय श्री राधेश्याम।
३७. ॐ नमो पार्वतीपतये हर-हर महादेव।
ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः

॥ प्रदक्षिणा ॥

जयघोष के बाद यज्ञ भगवान् की परिक्रमा करें—

ॐ यानि कानि च पापानि, ज्ञाताज्ञात कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु, प्रदक्षिणां पदे-पदे॥

॥ प्रसाद वितरण ॥

हमारे धर्मशास्त्रों में प्रसाद का विशेष महत्व है। इसलिए श्रद्धानुसार प्रसाद अवश्य बांटें। अन्नं न निद्यात्-प्रसाद की कभी अवज्ञा न करें।

अकाल मृत्यु हरणं, सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णोपादोदकं पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते॥

॥ देव विसर्जनम् ॥

पूजा वेदी सर्वतोभद्र मण्डल व यज्ञ कुण्ड में आवाहित सभी देव शक्तियों का यज्ञीय कार्य पूरा होने पर विसर्जन किया जाता है। दाहिने हाथ पर अक्षत, पुष्पादि लेकर श्रद्धापूर्वक देव विदाई मंत्रों के साथ करें। अक्षत-पुष्प पूजा के सभी स्थानों पर छोड़ें।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥
गच्छ त्वं भगवन्नग्ने सर्वस्थाने कुण्ड मध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

उक्त श्लोक बोलकर चौकियों के बंधे कलावे को खोल देवें।

"वासुदेव सर्वम् इति"

प्रेम से बोलो यज्ञ भगवान की जय।

आरतियाँ

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥जय॥

एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी॥जय॥

अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥जय॥

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥जय॥

दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी॥जय॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥जय॥



आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे॥ॐ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का॥ॐ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ॐ॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ॐ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ॐ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ॐ॥

दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ॐ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ॐ॥

श्री जगदीशजी की आरति, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपति पावे॥ॐ॥

***

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥टेक॥

मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रबदन नीको॥जय॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गलमाला कंठन पर साजै॥जय॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी॥जय॥
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥जय॥
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती॥जय॥
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे॥जय॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखनी, तुम शिव पटरानी॥जय॥
चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य कर भैरु।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ॥जय॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति दाता॥जय॥
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी॥ जय॥
कंवल थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥जय॥
श्री अम्बे की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पत्ति पावे॥जय॥

★★★

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर काँपै।
रोग-दोष जाके निकट न झाँपै॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥
बाँये भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥
लंक विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीर्ति गाई॥

***

आरती श्री शिवजी की

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ॐ॥

एकानन चतुरासन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥ॐ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥ॐ॥

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहै भाले शुभकारी॥ॐ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥ॐ॥

कर के मध्य कमंडल चक्र त्रिशूलधर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता जगपालनकर्ता॥ॐ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका॥ॐ॥

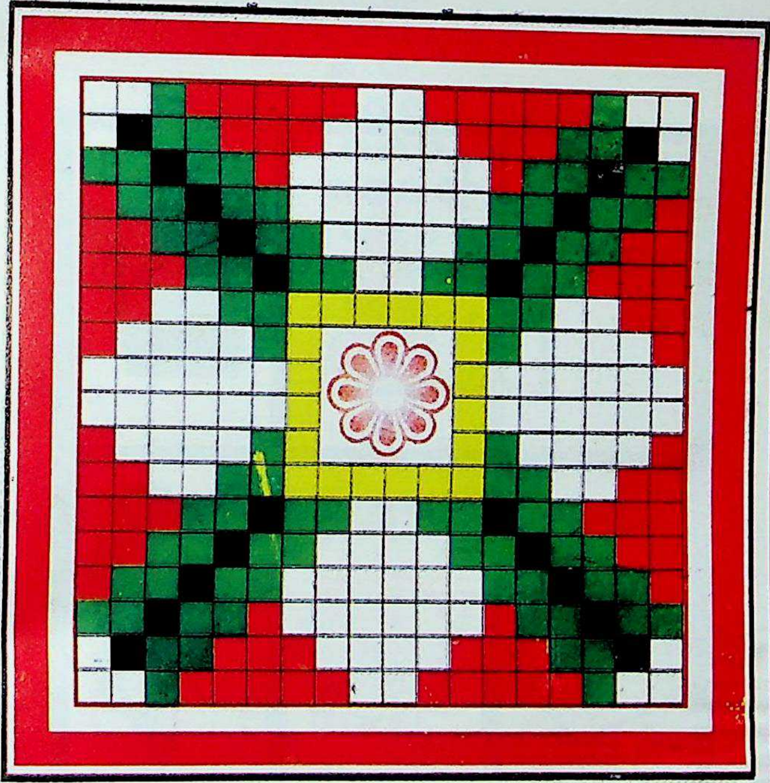
त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे॥ॐ॥



आरती श्री काली जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुन गाये भारती। ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
माता तेरे भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से बलशाली अष्ट भुजाओ वाली,
दुखियों के दुःख को निवारती। ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
मां बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।
सब पर करुणा दरसाने वाली अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुःख को निवारती। ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
नहीं मांगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना,
हम तो मांगे माँ तेरे मन का एक छोटा सा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

सर्वतोभद्रचक्रम्



प्रागुदीच्यायता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम्। खण्डेदुस्त्रिपदैः कोणे शृङ्खला पञ्चभिः पदैः ॥१॥

एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः। चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदैः ॥२॥

मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम्। श्वेतेन्दुः शृङ्खला कृष्णावली नीलेन पूरयेत् ॥३॥

भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः। बाह्यान्तर्दला श्वेत कर्णिका पीतवर्णिका ॥४॥

परिध्यावेष्टितं पद्म बाह्यो सत्वं रजस्तमः। तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥५॥

भद्रेण पूजनाशक्तौ कुर्य्यमष्टदलं शुभम्। गोधूमान्नेन तत्कार्यं तण्डुलेनाऽथवा शुभम् ॥६॥

नवग्रहचक्रम्

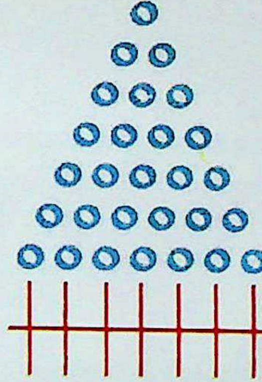
पू०

बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	भौम
केतु	शनि	राहु

उ०

प०

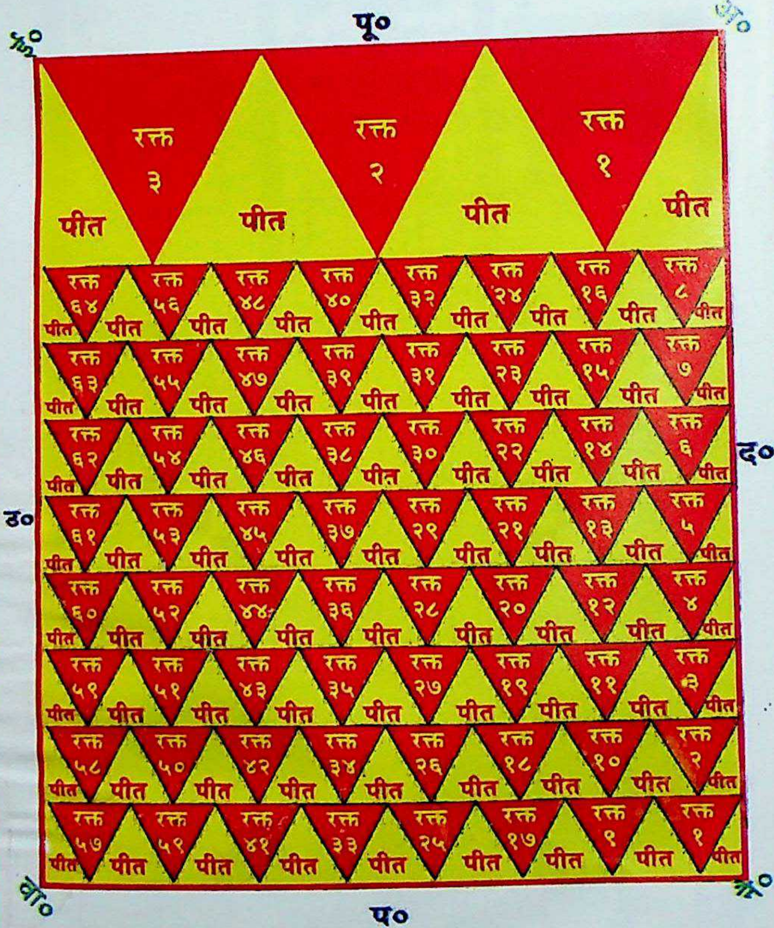
अथ वसोर्द्धाराचक्रम्



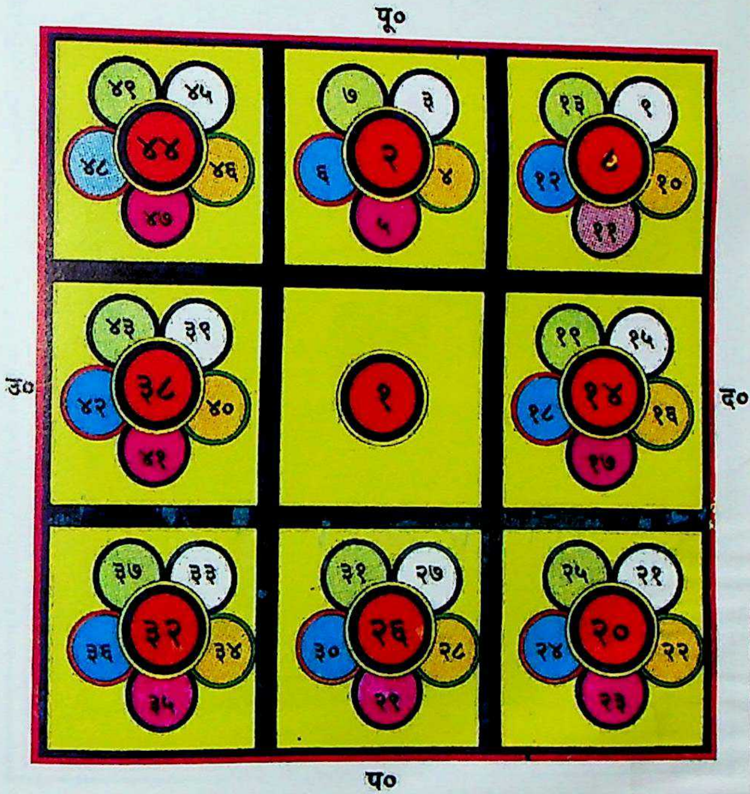
अथ षोडशमातृकाचक्रम्

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसेनायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः १०	ॐ सावित्र्यै नमः ६	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

चतुःषष्टियोगिनीचक्रम



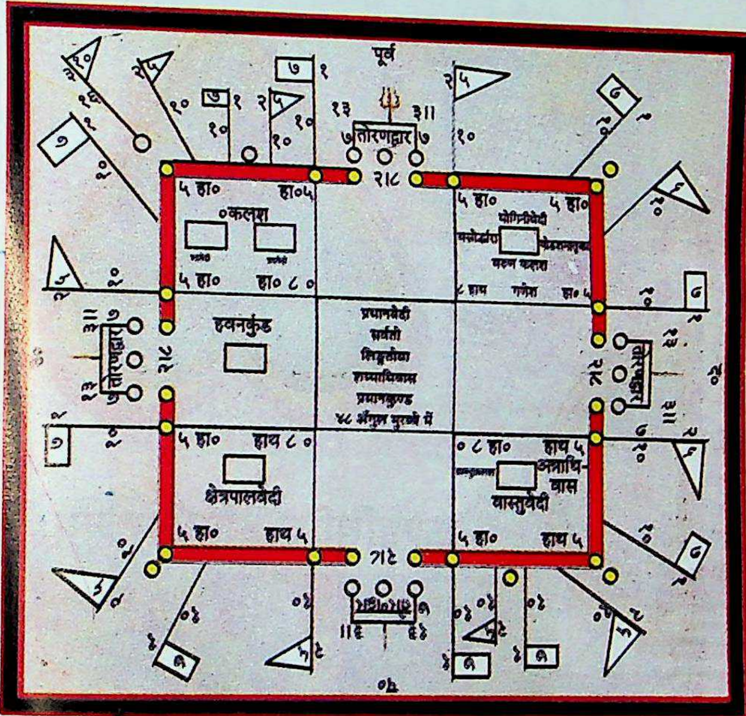
क्षेत्रपालचक्रम्


पू०
४९ ४५ ४४ ४८ ४६ ४७
७ ३ २ ६ ४ ५
१३ ९ ८ १२ १० ११
उ०
४३ ३९ ३८ ४२ ४० ४१
१
१९ १५ १४ १८ १६ १७
द०
३७ ३३ ३२ ३६ ३४ ३५
३१ २७ २६ ३० २८ २९
२५ २१ २० २४ २२ २३
प०

एकलिङ्गतोभद्रचक्रम्



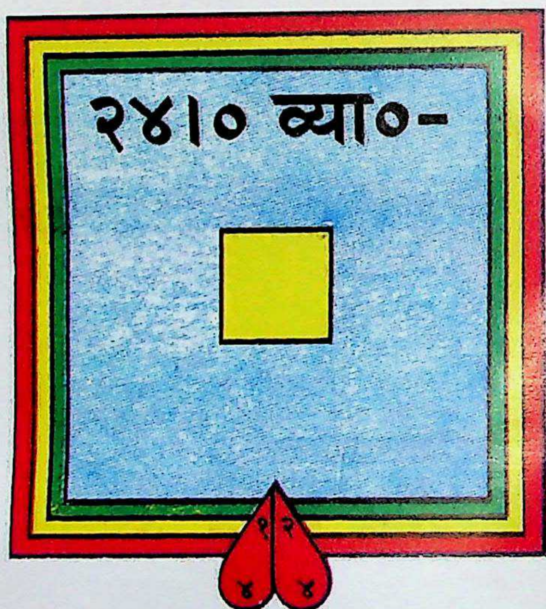
तोरणद्वारचक्रम्

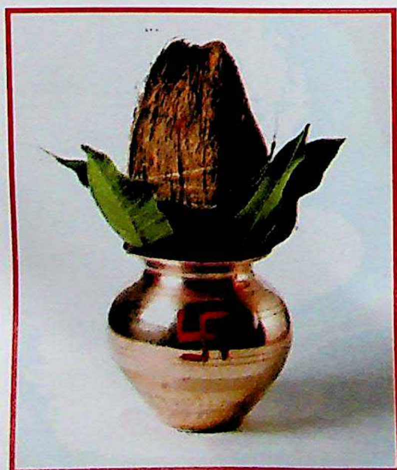




श्रीफल

चतुरस्रकुण्डस्वरूपम्





कलश


मनोज प्रकाशन, आगरा